

मध्यस्थ दर्शन सह-अस्तित्ववाद के आलोक में समग्र मानव विकास एवं परिवारमूलक स्वराज्य व्यवस्था

देव प्रकाश शर्मा

शोध छात्र, लोक जागृति विश्वविद्यालय, अहमदाबाद

एवं

सुरेंद्र पाठक

प्रोफेसर, लोक जागृति विश्वविद्यालय, अहमदाबाद

सारांश

ए. नागराज (2010, 2015) द्वारा प्रतिपादित मध्यस्थ दर्शन, सह-अस्तित्ववाद के सिद्धांत पर आधारित एक समग्र दार्शनिक ढांचा प्रस्तुत करता है, जो मानव गतिविधियों, सामाजिक संरचना एवं वैश्विक व्यवस्था के लिए एक मूल्य-संश्लेषित, समन्वित एवं मानवीय विकल्प प्रदान करता है। यह दर्शन आधुनिक विकास मॉडल की खंडितता, उपभोग-प्रधानता, सत्ता-केंद्रितता एवं पर्यावरण-विनाशकारी प्रवृत्तियों का कट्टर आलोचक है (पाठक, 2019)। इसके स्थान पर, यह अस्तित्व की सार्वभौमिक समग्रता, पारस्परिकता, पूरकता एवं मानवीय गरिमा को केंद्र में स्थापित करता है। सह-अस्तित्ववाद के अनुसार, समस्त अस्तित्व—प्रकृति, जीव-जगत एवं मानव—एक-दूसरे के साथ सह-अस्तित्व में बंधे हैं, जहां कोई शोषण या वर्चस्व नहीं, अपितु संतुलन एवं सहयोग ही प्राकृतिक व्यवस्था है (Madhyasth Darshan, 2024)। मानव गतिविधियां—चाहे उत्पादन, विनिमय, शिक्षा या शासन—केवल आर्थिक लाभ, उपयोगिता या प्रतिस्पर्धा से निर्देशित नहीं होतीं, बल्कि सही समझ (समझदारी), नैतिक आचरण (नैतिकता), धार्मिक व्यवहार (धार्मिकता) एवं अस्तित्व-व्यवस्था में सक्रिय सहभागिता से प्रेरित होती हैं। यह दृष्टि मानव को स्वयं की आंतरिक शांति एवं बाह्य सामंजस्य के माध्यम से सशक्त बनाती है, जहां व्यक्तिगत स्वार्थ सामूहिक कल्याण में विलीन हो जाता है।

इस दर्शन का व्यावहारिक प्रतिरूप 'परिवारमूलक स्वराज्य व्यवस्था' है, जो परिवार को सामाजिक, नैतिक एवं आर्थिक स्थायित्व की मूल इकाई मानती है (नागराज, 2015)। परिवार में माता-पिता, संतान एवं वृद्धजन के बीच प्रेमपूर्ण संबंध, उत्तरदायित्व एवं सहयोग की संस्कृति विकसित होती है, जो ग्राम-समुदाय, क्षेत्रीय संघ एवं विश्व-व्यापी नेटवर्क तक स्वाभाविक रूप से विस्तारित होती है (जीवन विद्या, 2023)। यह व्यवस्था राज्य-केंद्रित केंद्रीकरण या बाजार-प्रधान पूंजीवाद के विपरीत, विकेंद्रीकृत आत्म-नियमन, पारस्परिक उत्तरदायित्व, न्यायपूर्ण वितरण एवं सहभागी निर्णय-प्रक्रिया पर आधारित है।

मध्यस्थ दर्शन नैतिक मूल्यों को दैनिक जीवन की प्रणालियों से जोड़ता है: उत्पादन में संयमपूर्णता, वितरण में न्याय, शिक्षा में समग्र विकास एवं शासन में सह-अस्तित्व-संरक्षण (Chawda, 2020)। समकालीन चुनौतियों—जैसे जलवायु संकट, सामाजिक विघटन, आर्थिक विषमता, शासन-असफलता एवं मानसिक स्वास्थ्य संकट—के समाधान में यह दर्शन अत्यंत प्रासंगिक है। अंततः, यह मानव गतिविधियों को सह-अस्तित्व एवं समग्र कल्याण की दिशा में पुनर्संयोजित कर, एक टिकाऊ, मानवीय एवं संतुलित सामाजिक परिवर्तन का सशक्त मार्ग प्रशस्त करता है।

बीज शब्द: सह-अस्तित्ववाद, मध्यस्थ दर्शन, परिवारमूल स्वराज्य व्यवस्था, जीवन विद्या, मानव आचरण, टिकाऊ विकास, मूल्य शिक्षा, विकेंद्रीकृत शासन, पारस्परिक पूरकता, नैतिक व्यवहार, चेतना विकास, समग्र मानवतावाद

1. परिचय

आधुनिक विश्व में मानव सभ्यता का विकास एक विरोधाभासी यात्रा प्रतीत होता है। एक ओर, प्रौद्योगिकी एवं विज्ञान ने अभूतपूर्व प्रगति प्रदान की है, वहीं दूसरी ओर, यह विकास खंडित, असंतुलित एवं विनाशकारी सिद्ध हो रहा है। पूंजीवादी उपभोग-केंद्रित अर्थव्यवस्था, राज्य-केंद्रित सत्ता-प्रधान शासन तथा वैश्वीकरण की असमानतापूर्ण संरचना ने पर्यावरणीय संकट, सामाजिक विघटन, आर्थिक विषमता, मानसिक असंतोष एवं युद्धों को जन्म दिया है (IPCC, 2021; World Bank, 2022)।

संयुक्त राष्ट्र के सतत विकास लक्ष्यों (SDGs) के अनुसार, 2030 तक जलवायु परिवर्तन, गरीबी एवं असमानता के समाधान हेतु एक समग्र दृष्टि आवश्यक है (United Nations, 2015)। इन चुनौतियों के समाधान के लिए आवश्यक है एक ऐसा दार्शनिक ढांचा जो अस्तित्व की समग्रता को स्वीकार करे तथा मानव गतिविधियों को सह-अस्तित्व की दिशा में निर्देशित करे। इसी संदर्भ में, श्रद्धेय ए. नागराज द्वारा प्रतिपादित मध्यस्थ दर्शन (सह-अस्तित्ववाद) एक क्रांतिकारी वैकल्पिक दृष्टि के रूप में उभरता है (नागराज, 2010, 2015; Madhyasth Darshan, 2024)।

यह दर्शन अस्तित्व को सह-अस्तित्व के रूप में समझने वाला एक समग्र चिंतन है, जो आदर्शवाद एवं भौतिकवाद के द्वंद्व से परे जाकर मानव-केंद्रित व्यवस्था का प्रस्ताव करता है। मध्यस्थ दर्शन की खोज अमरकंटक (मध्य प्रदेश) में 1958 से 1997 तक चली ध्यान-साधना के माध्यम से हुई, जिसमें ए. नागराज ने अस्तित्व के अनुभव-आधारित ज्ञान को प्राप्त किया (नागराज, 2007)। यह दर्शन 'जीवन विद्या' के रूप में भी जाना जाता है, जो मानव चेतना के जागरण एवं समग्र विकास पर केंद्रित है।

नागराज (2010) के अनुसार, "अस्तित्व सह-अस्तित्व है", जो समस्त इकाइयों की पारस्परिकता एवं पूरकता पर जोर देता है। इसका व्यावहारिक आयाम 'परिवारमूल स्वराज्य व्यवस्था' है, जो परिवार को सामाजिक स्थायित्व की मूल इकाई मानते हुए विकेंद्रीकृत, आत्म-नियंत्रित एवं न्यायपूर्ण सामाजिक संरचना का निर्माण करता है (नागराज,

2015; जीवन विद्या, 2023)। यह व्यवस्था गांधीवादी स्वराज की अवधारणा से प्रेरित है (गांधी, 2009), किंतु सह-अस्तित्ववाद के माध्यम से अधिक समग्र एवं वैज्ञानिक रूप प्रदान करती है।

1.1 शोध का उद्देश्य एवं संरचना

इस शोध पत्र का उद्देश्य मध्यस्थ दर्शन के सैद्धांतिक आधार, मानव गतिविधियों पर इसके प्रभाव एवं परिवारमूल स्वराज्य व्यवस्था की संभावनाओं का विश्लेषण करना है। पत्र की संरचना निम्नानुसार है: साहित्य समीक्षा, मुख्य सिद्धांत, मानव आचरण एवं गतिविधियां, परिवारमूल स्वराज्य, समकालीन प्रासंगिकता एवं निष्कर्ष। यह अध्ययन सैद्धांतिक विश्लेषण एवं व्यावहारिक उदाहरणों पर आधारित है, जो दर्शन की प्रासंगिकता को रेखांकित करता है (Chawda, 2020; पाठक, 2019)।

मध्यस्थ दर्शन न केवल व्यक्तिगत स्तर पर शांति प्रदान करता है, अपितु सामाजिक एवं वैश्विक स्तर पर टिकाऊ विकास का आधार भी बनाता है। उदाहरणस्वरूप, भारत में जीवन विद्या कार्यशालाओं के माध्यम से हजारों व्यक्तियों ने इस दर्शन को अपनाया है, जिससे उनके जीवन में सकारात्मक परिवर्तन आया है (SCERT Delhi, 2023)। वैश्विक संदर्भ में, यह दर्शन सतत विकास एवं मानवाधिकारों की अवधारणाओं से संनादित है (United Nations, 2015)।

2. साहित्य समीक्षा

मध्यस्थ दर्शन का साहित्य मुख्यतः ए. नागराज के मूल ग्रंथों पर आधारित है, जो अनुभव-आधारित चिंतन का प्रतिनिधित्व करते हैं। नागराज (2015) के प्रमुख ग्रंथों में 'मानव व्यवहार दर्शन' शामिल है, जिसमें सह-अस्तित्व की अवधारणा को अस्तित्व की चार अवस्थाओं—पदार्थ, प्राण, जीव एवं ज्ञान—के माध्यम से समझाया गया है। इस ग्रंथ में, अवसरवादिता एवं न्यायवादिता के द्वंद्व का विश्लेषण किया गया है, जहां अवसरवादी व्यवहार क्षोभ एवं असंतोष का कारण बताया गया है।

नागराज (2018) के 'मानव अभ्यास दर्शन' में सह-अस्तित्व को मध्य मार्ग के रूप में वर्णित किया गया है, जो द्वैतवाद एवं एकतावाद के बीच संतुलन स्थापित करता है। हिंदी साहित्य में, 'विकल्प और जीवन विद्या अध्ययन बिंदु' (2015) दर्शन की व्यावहारिकता पर प्रकाश डालता है, जहां परिवारमूल स्वराज्य को उत्पादन, वितरण एवं शासन से जोड़ा गया है। Madhyasth Darshan (2018) की ब्लॉग पोस्ट में दस सोपानीय परिवारमूल स्वराज्य का विस्तृत वर्णन प्रस्तुत किया गया है।

अंग्रेजी साहित्य में, Madhyasth Darshan (2024) ने अस्तित्व को सह-अस्तित्व के रूप में परिभाषित करते हुए चेतना के कठिन प्रश्नों का समाधान प्रस्तुत किया है। शोध पत्रों में, Chawda (2020) ने 'Madhaysthan Darshan Based Value Education' में मूल्य शिक्षा को सह-अस्तित्व से जोड़ा है, जहां तकनीकी ज्ञान के साथ नैतिक

संस्कारों का समावेश आवश्यक बताया गया है। 'Teaching Methods in Madhyastha Darshan: A Research Perspective' (2024) में समग्र शिक्षा प्रणाली के रूप में इसका विश्लेषण किया गया है।

पाठक (2019) ने 'मध्यस्थ दर्शन: एक नया समग्र शिक्षा का प्रतिमान' में इस दर्शन की शैक्षणिक प्रासंगिकता को रेखांकित किया है। SCERT Delhi (2023) की रिपोर्ट ने खुशी और शिक्षा के संदर्भ में मूल्य-आधारित शिक्षा की आवश्यकता पर बल दिया है, जो मध्यस्थ दर्शन के सिद्धांतों से मेल खाती है। विभिन्न ऑनलाइन स्रोतों (Gupta, 2020; Dubey, 2025; जीवन विद्या, 2023) में परिवारमूल स्वराज्य व्यवस्था के व्यावहारिक पहलुओं पर चर्चा की गई है।

3. मध्यस्थ दर्शन के मूल सिद्धांत

मध्यस्थ दर्शन के केंद्र में 'सह-अस्तित्व' की अवधारणा है, जो अस्तित्व को एक समग्र, पारस्परिक रूप से जुड़े हुए यथार्थ के रूप में प्रस्तुत करती है। नागराज (2010) के अनुसार, "अस्तित्व सह-अस्तित्व में है", जिसका अर्थ है कि समस्त इकाइयां—पदार्थ, प्राण, जीव एवं ज्ञान—एक-दूसरे के साथ व्यापक अस्तित्व में व्यवस्थित हैं। यह दृष्टिकोण आदर्शवाद (चेतना प्रधान) एवं भौतिकवाद (पदार्थ प्रधान) के द्वंद्व से परे जाकर एक तीसरा विकल्प प्रस्तुत करता है, जहां अस्तित्व को चार अवस्थाओं की सह-अभिव्यक्ति के रूप में समझा जाता है।

3.1 सह-अस्तित्व की अवधारणा

सह-अस्तित्व का अर्थ है कि समस्त इकाइयां परस्पर-पूरक, व्यवस्थित एवं संतुलित संबंध में हैं। नागराज (2015) ने चार अवस्थाओं का वर्णन किया है:

- 1. पदार्थ अवस्था:** भौतिक इकाइयां जो रासायनिक एवं भौतिक नियमों से संचालित होती हैं। यह अवस्था 'पहचानने की क्रिया' में संलग्न है।
- 2. प्राण अवस्था:** वनस्पति जगत जो स्वयं को बनाए रखने एवं विकसित होने में लगा है। यह अवस्था 'शरीर-पोषण, संरक्षण एवं विस्तार' की क्रिया में संलग्न है।
- 3. जीव अवस्था:** पशु जगत जो शरीर-संवेदना से प्रेरित होकर कार्य करता है। यह अवस्था 'शरीर-सुख' की क्रिया में संलग्न है।
- 4. ज्ञान अवस्था:** मानव जो ज्ञान, विवेक एवं विज्ञान से युक्त है, एवं सह-अस्तित्व को समझने एवं जीने की क्षमता रखता है। यह अवस्था 'सुख एवं समाधान' की खोज में संलग्न है (नागराज, 2015)।

Madhyasth Darshan (2024) के अनुसार, मानव ही एकमात्र ऐसी अवस्था है जो सह-अस्तित्व को समझ सकती है एवं व्यवस्था में सहभागी हो सकती है। यह क्षमता मानव को अन्य अवस्थाओं से विशिष्ट बनाती है, किंतु साथ ही यह उत्तरदायित्व भी देती है कि वह प्रकृति के साथ संतुलित संबंध स्थापित करे।

3.2 मानवीय लक्ष्य: समाधान, समृद्धि, अभय एवं सह-अस्तित्व

मध्यस्थ दर्शन मानव के चार मूल लक्ष्यों की पहचान करता है (नागराज, 2007):

1. **समाधान (सुख):** मानव की आंतरिक शांति एवं संतुष्टि, जो सह-अस्तित्व की समझ से प्राप्त होती है।
2. **समृद्धि:** आवश्यकताओं की पूर्ति एवं 'अभाव का अभाव', जहां व्यक्ति अपने परिवार एवं समाज के लिए उत्पादक योगदान करता है।
3. **अभय (निर्भयता):** न्यायपूर्ण जीवन से उत्पन्न सुरक्षा एवं विश्वास, जहां शोषण या भय का कोई स्थान नहीं।
4. **सह-अस्तित्व (व्यवस्था):** प्रकृति एवं समाज के साथ संतुलित, परस्पर-पूरक संबंध, जो सार्वभौमिक व्यवस्था में योगदान करता है।

ये लक्ष्य केवल सैद्धांतिक नहीं हैं, अपितु व्यावहारिक जीवन में प्राप्त किए जा सकते हैं। Chawda (2020) ने इन लक्ष्यों को शिक्षा प्रणाली में समाहित करने की आवश्यकता पर बल दिया है, जहां मूल्य-आधारित ज्ञान के माध्यम से छात्रों में समझ, संबंध, स्वास्थ्य, संपदा एवं शांति की क्षमता विकसित की जाए।

3.3 मानव चेतना का विकास

मध्यस्थ दर्शन मानव चेतना के तीन स्तरों की पहचान करता है: जीव चेतना (पशु-बोध से प्रेरित), मानव चेतना (ज्ञान एवं विवेक से युक्त) एवं दिव्य चेतना (सह-अस्तित्व की पूर्ण अनुभूति)। नागराज (2015) के अनुसार, वर्तमान में अधिकांश मानव 'जीव चेतना' में जी रहे हैं, जहां शरीर-सुख, स्वार्थ एवं अवसरवादिता प्रमुख हैं। मानव चेतना में जागरण के लिए 'जीवन विद्या' के माध्यम से शिक्षा एवं अनुभव आवश्यक हैं।

SCERT Delhi (2023) की रिपोर्ट में चेतना विकास की आवश्यकता पर बल दिया गया है, जहां शिक्षा केवल सूचना-प्रदान न होकर आंतरिक परिवर्तन का माध्यम बने। यह दृष्टिकोण मध्यस्थ दर्शन की शिक्षा प्रणाली से मेल खाता है, जो समझदारी, स्वाभिमान, सम्मान एवं सहयोग के मूल्यों पर आधारित है।

4. मानव आचरण एवं गतिविधियां

मध्यस्थ दर्शन मानव गतिविधियों को चार प्रमुख क्षेत्रों में वर्गीकृत करता है: उत्पादन-कार्य, शिक्षा-संस्कार, स्वास्थ्य-संयम एवं न्याय-सुरक्षा। ये गतिविधियां केवल आर्थिक लाभ या उपयोगिता से संचालित नहीं होतीं, अपितु सह-अस्तित्व की समझ एवं न्यायपूर्ण जीवन से प्रेरित होती हैं (नागराज, 2015)।

4.1 उत्पादन-कार्य: पूरकता एवं संयम

मध्यस्थ दर्शन में उत्पादन केवल आर्थिक गतिविधि नहीं, अपितु समाज के प्रति उत्तरदायित्व है। उत्पादक एवं उपभोक्ता परस्पर-पूरक होते हैं, जहां उत्पादक आवश्यकता-आधारित वस्तुएं प्रदान करता है एवं उपभोक्ता उचित मूल्य देता है। नागराज (2010) के अनुसार, "उत्पादन-कार्य में शोषण या असमानता का कोई स्थान नहीं, केवल सहयोग एवं संयम।" यह दृष्टिकोण पूंजीवादी लाभ-केंद्रितता से भिन्न है, जहां उत्पादन अधिकतम लाभ के लिए होता है।

व्यावहारिक रूप से, परिवारमूल स्वराज्य में उत्पादन ग्राम स्तर पर संगठित होता है, जहां प्रत्येक परिवार अपनी क्षमतानुसार योगदान करता है। उदाहरणस्वरूप, एक कृषक परिवार खाद्यान्न उत्पादन करता है, एक कारीगर परिवार उपकरण बनाता है, तथा एक बुद्धिजीवी परिवार शिक्षा प्रदान करता है। सभी परिवारों के योगदान समान रूप से सम्मानित होते हैं, जिससे असमानता समाप्त होती है (जीवन विद्या, 2023)।

4.2 शिक्षा-संस्कार: चेतना विकास मूल्य शिक्षा

शिक्षा मध्यस्थ दर्शन का केंद्रीय तत्व है। Chawda (2020) ने 'चेतना विकास मूल्य शिक्षा' (Consciousness Development Value Education - CDVE) का प्रस्ताव दिया है, जो जीवन विद्या पर आधारित है। इसमें तकनीकी ज्ञान के साथ-साथ नैतिक, सामाजिक एवं पर्यावरणीय मूल्यों का समावेश होता है। शिक्षा का उद्देश्य केवल रोजगार-प्राप्ति नहीं, अपितु समझदारी, सम्मान एवं सहयोग की क्षमता विकसित करना है।

Teaching Methods in Madhyastha Darshan (2024) में शिक्षा के पांच आयाम बताए गए हैं:

1. **समझ (Understanding):** सह-अस्तित्व की अवधारणा को समझना।
2. **संबंध (Relationships):** परिवार, समाज एवं प्रकृति के साथ सही संबंध स्थापित करना।
3. **स्वास्थ्य (Health):** शारीरिक एवं मानसिक संयम।
4. **संपदा (Prosperity):** आवश्यकता-आधारित उत्पादन एवं वितरण।
5. **शांति (Peace):** व्यक्तिगत एवं सामूहिक शांति की स्थापना।

SCERT Delhi (2023) की रिपोर्ट में शिक्षा में खुशी एवं संतोष की खोज पर जोर दिया गया है, जो मध्यस्थ दर्शन के दृष्टिकोण से मेल खाता है। यह दृष्टिकोण UNESCO (2015) के 'Education for Sustainable Development' के लक्ष्यों के अनुरूप भी है।

4.3 स्वास्थ्य-संयम एवं न्याय-सुरक्षा

स्वास्थ्य को मध्यस्थ दर्शन में केवल शारीरिक स्वस्थता नहीं, अपितु मानसिक संतुलन एवं संयम के रूप में देखा जाता है। नागराज (2015) के अनुसार, "स्वास्थ्य व्यक्ति की स्वायत्तता एवं आत्म-नियंत्रण की क्षमता है।" यह दृष्टिकोण WHO (2020) के समग्र स्वास्थ्य (holistic health) की अवधारणा से संगत है।

न्याय-सुरक्षा में शोषण-मुक्त संबंध, समानता एवं अधिकारों की सुरक्षा सुनिश्चित की जाती है। नागराज (2007) ने 'मानवीय आचार संहिता' में न्याय को परस्पर-पूरकता के रूप में परिभाषित किया है, जहां प्रत्येक व्यक्ति को सम्मान एवं स्वाभिमान प्राप्त होता है। यह दृष्टिकोण United Nations (1948) की मानवाधिकार घोषणा के सिद्धांतों से मेल खाता है।

5. परिवारमूल स्वराज्य व्यवस्था

परिवारमूल स्वराज्य व्यवस्था मध्यस्थ दर्शन का व्यावहारिक प्रतिरूप है, जो सह-अस्तित्ववाद के सिद्धांतों पर आधारित एक विकेंद्रीकृत, आत्म-नियमित एवं न्यायपूर्ण सामाजिक संरचना प्रस्तुत करती है। नागराज (2015) के अनुसार, "अखण्ड समाज, परिवार मूलक स्वराज्य व्यवस्था व मानव सहज प्रमाण परम्परा ही अतिमानवीय सामाजिक व्यवस्था है।" यह व्यवस्था परिवार को सामाजिक, नैतिक एवं आर्थिक स्थायित्व की मूल इकाई मानती है।

5.1 दस सोपानीय संरचना

इस व्यवस्था की संरचना 'दस सोपानीय परिवार मूलक स्वराज्य व्यवस्था' पर टिकी है, जो दस चरणों में परिवार से विश्व स्तर तक विस्तार करती है (Madhyasth Darshan, 2018; जीवन विद्या, 2023):

1. **प्रथम चरण:** 10 समझदार परिवारों का समूह, जहां प्रत्येक परिवार से एक प्रतिनिधि निर्वाचित होकर परिवार-समूह सभा बनाता है।
2. **द्वितीय चरण:** 10 परिवार-समूह मिलकर ग्राम-परिवार सभा (कुल 100 परिवार) गठित करते हैं।
3. **तृतीय चरण:** 10 ग्राम-परिवार सभाएं ग्राम-समूह परिवार-सभा (10 ग्रामों तक उत्पादन व्यवस्था) बनाती हैं।
- 4-10. **उत्तरोत्तर चरण:** मंडल स्तर (10,000 परिवार), मंडल-समूह, मुख्य-राज्य, प्रधान-राज्य, राष्ट्र, राष्ट्र-समूह एवं अंततः विश्व परिवार-सभा तक विस्तार।

यह संरचना सह-अस्तित्ववादी ज्ञान, विवेक एवं विज्ञान पर आधारित है, जहां निर्वाचन प्रक्रिया पारंगतता एवं सहभागिता पर जोर देती है। सभी सदस्यों के अधिकार समान होते हैं, कोई एकल मुखिया नहीं।

5.2 पांच प्रमुख आयाम

व्यवस्था के पांच प्रमुख आयाम हैं जो सभी स्तरों पर कार्यान्वित होते हैं (नागराज, 2015; जीवन विद्या, 2023):

1. शिक्षा-संस्कार कार्य: परिवारों की पारंगतता का मूल्यांकन, चेतना विकास मूल्य शिक्षा (CDVE) के माध्यम से मूल्य-संस्कार।
2. न्याय-सुरक्षा कार्य: न्यायपूर्ण जीवन का परिशीलन, शोषण-मुक्त संबंधों को मजबूत करना।
3. स्वास्थ्य-संयम कार्य: स्वायत्तता एवं संयमपूर्णता पर जोर।
4. उत्पादन कार्य: उत्पादक-उपभोक्ता की पूरकता, आवश्यकता-आधारित श्रम।
5. विनिमय-कोष कार्य: संसाधनों के संतुलित वितरण, ग्राम स्तर पर 100 परिवारों के बीच असंतुलन का समाधान।

Madhyasth Darshan (2024) के अनुसार, "परिवार मूलक स्वराज्य व्यवस्था सार्वभौम मानवीय संविधान का हिस्सा है, जो परिवार से विश्व परिवार तक सामंजस्यपूर्ण व्यवस्था स्थापित करती है।"

5.3 व्यावहारिक उदाहरण एवं सफलता

परिवारमूल स्वराज्य की व्यावहारिकता के उदाहरण भारत में देखे जा सकते हैं। Gupta (2020) ने रायपुर के अभिभावक विद्यालय में इस व्यवस्था के प्रशिक्षण की सफलता का वर्णन किया है, जहां पारिवारिक सहकारिता से शिक्षा एवं उत्पादन में उल्लेखनीय प्रगति हुई। Dubey (2025) ने इस व्यवस्था की आवश्यकता पर बल देते हुए कहा कि यह सामाजिक विघटन के समाधान के रूप में अत्यंत प्रासंगिक है।

यह व्यवस्था गांधी (2009) के ग्राम स्वराज से प्रेरित है, किंतु सह-अस्तित्व पर आधारित होने के कारण अधिक समग्र है। गांधी के स्वराज में स्वायत्तता एवं विकेंद्रीकरण पर जोर था, किंतु मध्यस्थ दर्शन इसे सह-अस्तित्व की वैज्ञानिक समझ से जोड़कर पर्यावरणीय संतुलन एवं सामाजिक सामंजस्य को प्राथमिकता देता है।

6. समकालीन प्रासंगिकता

समकालीन वैश्विक संकट—जैसे जलवायु परिवर्तन, सामाजिक असमानता, महामारी, युद्ध एवं मानसिक स्वास्थ्य संकट—के संदर्भ में मध्यस्थ दर्शन अत्यंत प्रासंगिक है। यह दर्शन इन समस्याओं के मूल कारणों को संबोधित करता है, जो मुख्यतः अस्तित्व की खंडित समझ, शोषणकारी संबंध एवं अवसरवादी व्यवहार हैं (पाठक, 2019)।

6.1 जलवायु संकट एवं पर्यावरण संरक्षण

IPCC (2021) की रिपोर्ट के अनुसार, वैश्विक तापमान में वृद्धि एवं पर्यावरणीय विनाश मानव गतिविधियों से प्रेरित है। मध्यस्थ दर्शन पर्यावरण को शोष्य संसाधन न मानकर जीवंत साझेदार के रूप में देखता है। सह-अस्तित्व की अवधारणा यह सुनिश्चित करती है कि प्रकृति के साथ संतुलित संबंध स्थापित हो (नागराज, 2010)। उदाहरणस्वरूप, परिवारमूल स्वराज्य में उत्पादन आवश्यकता-आधारित होता है, न कि अधिकतम लाभ के लिए, जो संसाधनों के अत्यधिक दोहन को रोकता है।

UNESCO (2015) के 'Education for Sustainable Development' के लक्ष्यों के अनुरूप, मध्यस्थ दर्शन शिक्षा में पर्यावरणीय जागरूकता एवं संयम को शामिल करता है। Chawda (2020) ने इस दिशा में CDVE की प्रभावशीलता को रेखांकित किया है।

6.2 सामाजिक असमानता एवं आर्थिक विषमता

World Bank (2022) के आंकड़ों के अनुसार, वैश्विक असमानता बढ़ती जा रही है, जहां 1% जनसंख्या के पास 50% से अधिक संपत्ति है। मध्यस्थ दर्शन इस असमानता को पूरकता द्वारा संतुलित करता है। परिवारमूल स्वराज्य में सभी परिवारों के योगदान समान रूप से सम्मानित होते हैं, जिससे वर्ग-आधारित शोषण समाप्त होता है (नागराज, 2015)।

विनिमय-कोष व्यवस्था के माध्यम से, संसाधनों का संतुलित वितरण सुनिश्चित किया जाता है। जीवन विद्या (2023) के अनुसार, ग्राम स्तर पर 100 परिवारों के बीच असंतुलन का समाधान सहभागी निर्णय-प्रक्रिया द्वारा किया जाता है, जो लोकतांत्रिक एवं न्यायपूर्ण है।

6.3 शासन संकट एवं स्वराज

समकालीन शासन प्रणालियां केंद्रीकृत सत्ता, भ्रष्टाचार एवं नागरिकों की अपर्याप्त भागीदारी से ग्रस्त हैं। मध्यस्थ दर्शन का स्वराज विकेंद्रीकृत, सहभागी एवं आत्म-नियंत्रित है। प्रत्येक व्यक्ति निर्णय-प्रक्रिया में सक्रिय भूमिका निभाता है, जो सत्ता के दुरुपयोग को रोकता है (Madhyasth Darshan, 2024)।

यह दृष्टिकोण गांधी (2009) के स्वराज से प्रेरित है, किंतु सह-अस्तित्व पर आधारित होने के कारण अधिक समग्र है। Dubey (2025) ने इस व्यवस्था को सामाजिक विघटन के समाधान के रूप में रेखांकित किया है।

6.4 मानसिक स्वास्थ्य एवं सुख की खोज

WHO (2020) के अनुसार, विश्व में मानसिक स्वास्थ्य संकट बढ़ रहा है, जो तनाव, अवसाद एवं चिंता के रूप में प्रकट हो रहा है। मध्यस्थ दर्शन मानसिक शांति को सह-अस्तित्व की समझ से जोड़ता है। नागराज (2010) के अनुसार, "समाधान (सुख) तभी प्राप्त होता है जब व्यक्ति अपने अस्तित्व को सह-अस्तित्व के रूप में समझता है।"

SCERT Delhi (2023) की रिपोर्ट में शिक्षा में खुशी की खोज पर जोर दिया गया है, जो मध्यस्थ दर्शन के दृष्टिकोण से मेल खाता है। जीवन विद्या कार्यशालाओं में प्रतिभागियों ने आंतरिक शांति एवं संबंधों में सुधार की अनुभूति की है।

7. निष्कर्ष

मध्यस्थ दर्शन एवं सह-अस्तित्ववाद मानव गतिविधियों एवं परिवारमूल स्वराज्य के लिए एक समग्र, वैज्ञानिक एवं व्यावहारिक विकल्प प्रस्तुत करते हैं। यह दर्शन अस्तित्व की समग्रता को साकार कर व्यक्तिगत एवं सामूहिक कल्याण सुनिश्चित करता है। नागराज (2010, 2015) द्वारा प्रतिपादित यह दृष्टि आदर्शवाद एवं भौतिकवाद के द्वंद्व से परे जाकर एक तीसरा मार्ग प्रस्तुत करती है, जो मानव को सह-अस्तित्व की समझ प्रदान करती है।

परिवारमूल स्वराज्य व्यवस्था इस दर्शन का व्यावहारिक आयाम है, जो परिवार को सामाजिक स्थायित्व की मूल इकाई मानते हुए विकेंद्रीकृत, आत्म-नियंत्रित एवं न्यायपूर्ण सामाजिक संरचना का निर्माण करती है (जीवन विद्या, 2023; Madhyasth Darshan, 2024)। यह व्यवस्था समकालीन संकटों—जलवायु परिवर्तन, सामाजिक असमानता, शासन-असफलता एवं मानसिक स्वास्थ्य संकट—के समाधान में अत्यंत प्रासंगिक है।

भविष्य में इस दर्शन के प्रसार से वैश्विक शांति, सतत विकास एवं मानवीय समृद्धि संभव है। Chawda (2020) ने शिक्षा में इसकी प्रभावशीलता को सिद्ध किया है, जबकि SCERT Delhi (2023) की रिपोर्ट ने मूल्य-आधारित शिक्षा की आवश्यकता को रेखांकित किया है। यह दर्शन न केवल भारतीय संदर्भ में, अपितु वैश्विक स्तर पर सतत विकास लक्ष्यों (SDGs) को प्राप्त करने में सहायक हो सकता है (United Nations, 2015)।

7.1 शोध की सिफारिशें

इस शोध के आधार पर निम्नलिखित सिफारिशें प्रस्तुत हैं:

- व्यावहारिक प्रयोग:** परिवारमूल स्वराज्य व्यवस्था के व्यावहारिक प्रयोगों पर अधिक अध्ययन एवं अनुसंधान की आवश्यकता है।
- शिक्षा प्रणाली में समावेश:** चेतना विकास मूल्य शिक्षा (CDVE) को औपचारिक शिक्षा प्रणाली में शामिल किया जाए (Chawda, 2020)।
- नीति निर्माण:** सरकारों को विकेंद्रीकृत शासन एवं सतत विकास के लिए इस दर्शन के सिद्धांतों को नीतियों में शामिल करना चाहिए।
- अंतरराष्ट्रीय सहयोग:** वैश्विक स्तर पर सह-अस्तित्ववाद के प्रसार के लिए अंतरराष्ट्रीय सहयोग एवं संवाद आवश्यक है।
- तुलनात्मक अध्ययन:** मध्यस्थ दर्शन की तुलना अन्य दार्शनिक एवं सामाजिक प्रणालियों से करते हुए इसकी विशिष्टता को स्पष्ट किया जाए।

अंततः, मध्यस्थ दर्शन मानव सभ्यता के लिए एक आशापूर्ण दिशा प्रदान करता है, जहां मानव प्रकृति के साथ सामंजस्य में निवास करे एवं सामाजिक संबंधों में शांति, समृद्धि एवं न्याय स्थापित हो।

संदर्भ

1. Chawda, H. (2020). *Madhaysth Darshan Based Value Education*. ResearchGate. https://www.researchgate.net/publication/344262323_Madhaysth_Darshan_Based_Value_Education
2. Dubey, D. (2025). जीवन दर्शन | मध्यस्थ दर्शन पर आधारित परिवार मूलक स्वराज्य व्यवस्था क्यों है आवश्यक [Video]. Facebook. <https://www.facebook.com/devduttubey111/videos/1527228084937033/>
3. Gupta, R. (2020). मध्यस्थ दर्शन सम्मत - परिवार मूलक ग्राम स्वराज्य व्यवस्था - एक शोध [Video]. YouTube. <https://www.youtube.com/watch?v=23N-CZpsbQQ>
4. IPCC. (2021). *Climate Change 2021: The Physical Science Basis*. Cambridge University Press.
5. *Madhyasth Darshan*. (2018). मध्यस्थ दर्शन के लोकव्यापीकरण की तीन योजनायें. Jeevan Vidya Blog. http://madhyasth-darshan.blogspot.com/2018/09/blog-post_18.html
6. *Madhyasth Darshan*. (2024). *What is Madhyasth Darshan*. <https://www.madhyasth.org/philosophy/in-brief>
7. SCERT Delhi. (2023). *The Pursuit of Happiness in Education*. https://scert.delhi.gov.in/sites/default/files/2023-05/happiness_study_2022_v0.26_1_compressed.pdf
8. *Teaching Methods in Madhyastha Darshan: A Research Perspective*. (2024). *Journal of Namibian Studies*. <https://www.namibian-studies.com/index.php/JNS/article/view/7685>
9. UNESCO. (2015). *Education for Sustainable Development Goals: Learning Objectives*. UNESCO Publishing.
10. United Nations. (1948). *Universal Declaration of Human Rights*. UN General Assembly.
11. United Nations. (2015). *Transforming Our World: The 2030 Agenda for Sustainable Development*. UN General Assembly.
12. WHO. (2020). *Mental Health and COVID-19*. World Health Organization.

13. World Bank. (2022). *Poverty and Shared Prosperity 2022: Correcting Course*. World Bank Publications.
14. गांधी, एम. के. (2009). *हिंद स्वराज या भारतीय स्वराज*. नवजीवन ट्रस्ट.
15. जीवन विद्या. (2023). *परिवार मूलक स्वराज्य व्यवस्था*. <https://www.jeevan-vidya.com/parivar-mulak-swarajya-vyavastha/>
16. नागराज, ए. (2007). *मानवीय आचार संहिता रूपी मानवीय संविधान सूत्र व्याख्या*. जीवन विद्या प्रकाशन.
17. नागराज, ए. (2010). *मध्यस्थ दर्शन: सह अस्तित्ववादी चिंतन*. जीवन विद्या प्रकाशन.
18. नागराज, ए. (2015). *मानव व्यवहार दर्शन*. आत्मिय विश्वविद्यालय.
https://atmiyauni.ac.in/public/file/1733135804.04_manav_vyavhar_darshan_2015_ocr.pdf
19. नागराज, ए. (2018). *मानव अभ्यास दर्शन*. https://madhyasth-darshan.info/wp-content/uploads/2022/02/06_manav_abhyas_darshan_2018_c.pdf
20. पाठक, स. (2019). *मध्यस्थ दर्शन: एक नया समग्र शिक्षा का प्रतिमान*. जीवन विद्या प्रकाशन.
21. *मध्यस्थ दर्शन प्रामाणिक साइट*. (2024). *मध्यस्थ दर्शन - संक्षिप्त परिचय*.
<https://originals.madhyasth.org/>

